B.A. HINDI HONOURSE PART – 1

PAPER – 1

"आदिकाल की धार्मिक व सामाजिक परिस्थितियां"

Dr. Nand Kishore Pandit

Asst. Prof. Hindi

APSM College, Barauni

धार्मिक परिस्थितियां

इस काल में अनेक प्रकार के धार्मिक मत - मतांतरो का अस्तित्व था। भारतीय धर्म - साधना में उथल - पुथल मची हुई थी। सम्राट हर्षवर्धन के समय ब्राह्मण और बौद्ध धर्म का सामान आदर था। इन धर्मों ने आपस में आदन - प्रदान करते हुए समन्वय का उदाहरण भी प्रस्तुत किया। किंतु राजनीति की तरह हर्षवर्धन कि मृत्यु के बाद धार्मिक स्थिति भी बदली। केन्द्रीय सत्ता के अभाव में धर्म के क्षेत्र में अराजकता फैल गई। वेद - शास्त्रों के विधि - विधान और कर्मकांड को लेकर चलने वाले ब्राह्मण धर्म और बौद्ध धर्म में संघर्ष होने लगें। परिणामतः आम आदमी धर्म के वास्तविक आदर्श को भुलकर जादू - टोने और तंत्र - मंत्र में विश्वास करने लगे थे। बौद्ध धर्म की इन शाखाओं में तंत्र - मंत्र, हठयोग आदि के साथ पंचमकारों (मांस, मैथुन, मतस्त, मद्य, मुद्रा) को बिना साधना अधूरी होती जा रही थी। इनके बिना साधना अधूरी होती है जा रही है। तंत्र - मंत्र, जादू - टोने, तथा भोग - विलास को लेकर चलने वाले ही ये वाममार्गी ही बौद्ध सिद्ध कहलाए। दूसरी तरफ़ धर्म नियम, संयम और हठयोग के द्वारा साधना के कठिन मार्ग पर बढ़ने वाले नाथ, सिद्ध के रुप में जाने गए।

पश्चिमी भारत में व्यापारियों के बीच जैन धर्म लोकप्रिय था। पश्चिमी भारत में जैन धर्म का प्रचार ही रहा था। किंतु बौद्ध की विकृति का प्रभाव जैन धर्म पर पड़ रहा था, और भी अपने आदर्शों से दूर हट रहा था।

सामाजिक परिस्थितियां

राजनीतिक एवम् धार्मिक परिस्थितियों के कारण समाज में विश्रृंखलता आ गई थी। जनता शासन तथा धर्म दोनों ओर से निराश्रित होती जा रही थी। राजपुत के पास सत्ता होने के कारण समाज में उनका दबदबा बढ़ा। इससे ब्राह्मणों के वर्चस्व को खतरा महसूस हुआ, इसीलिए उन्होंने वर्णवाद की कट्टरता को थोड़ा लचीला बनाकर राजपुत को क्षत्रिय की संज्ञा दी। जनता की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। जनता ' शासन ' और ' धर्म ' दोनों से स्वयं को निराश्रित पा रहा था। वास्तविकता यह थी कि दोनों ही जनता का शोषण कर रहे थे। समाज छोटी – छोटी जातियों उप – जातियों में विभाजित था , समाज में अनेक रूढ़ियां पनप रही थी। समाज में नारी की दशा अत्यंत सोचनीय अथवा दयनीय थी। वह मात्र भोग की वस्तु रह गई थी , उसका क्रय विक्रय किया जा रहा था। सामान्य जन शिक्षा से वंचित था , निर्धनता बढ़ती जा रही थी , सती प्रथा का भयंकर अभिशाप था राजपूतों में आत्मसम्मान का स्वाभिमान था। नारी के कारण युद्ध भी हुआ करते थे। राजाओं में बहु – विवाह की प्रथा का प्रचलन था।

Dr. Nand Kishore Pandit

Asst. Prof. Hindi

APSM College, Barauni